सत्र 2018

THEORY OF FASHION II

CD- 203

समय - 1 घंटा

अंक 15

1. संक्षिप्त में उत्तर दीजिये :-
Answer in brief.

(i) कालीन के प्रकार ।
Types of carpets.

(ii) कम्बल या तौलिये के आवश्यक गुण ।
Essential features & quality of Blanket or Towels.

(iii) रेडीमेड परिधानों का परिचय एवं विशेषताए । 3 × 3 = (9)
Introduction and Characteristics of Readymade Garments.

2. अवसर अनुसार परिधान चयन में आवश्यक सावधानियाँ समझाइये ।
Explain the necessary precautions in selection of Garments in occasion. (6)

(Q.M) दरी/कालीन (CARPET) के प्रकार (TYPES)
Ans.

गृहसज्जा में दरी या कालीन कक्ष/स्थान विशेष की सम्पूर्ण सजावट व रंग संयोजन कर सौन्दर्य में वृद्धि करते हैं।

दरियाँ एवं कालीन weaving, Knitting व Felting विधि द्वारा तैयार किए जाते हैं। बुने हुए (weaving) कालीन मँहगे व पाइलयुक्त गुच्छेदार कालीन सस्ते होते हैं। बुने हुए कालीन निर्माण में समय, श्रम व व्यय अधिक लगता है। अतः दरी/कालीन का चयन करते समय उपयोगिता, संरचना, मजबूती, कार्यक्षमता, आकार, रंग, नमूने, आकर्षण एवं सौन्दर्य पक्ष पर विशेष ध्यान देकर विवेकपूर्ण निर्णय लिया जाना चाहिए ताकि लागत का अधिकाधिक लाभ प्राप्त हो सके।

निर्माण विधि के आधार पर दरी/कालीन के प्रकार (Types)

1. चपटाकार दरी (FLAT CARPET)
बुनाई द्वारा तैयार व दोनों सतह चपटी होती है। दोनों तरफ से समान बिछाने के कारण सभी ओर समान दबाव व कार्यक्षमता में वृद्धि होती है।

2. तक्षित दरी (KNOTTED/SCULPTURED CARPET)
इस प्रकार की दरियों में सतह पर आवश्यक व इच्छानुसार ऊँचाई में विभिन्न आकृतियों के नमूने फंदों द्वारा उभारे जाते हैं।

3. कटे फंदे वाली दरी (CUT PILE CARPET)
इन दरियों में सतह पर बिना बटे हुए (UNTWISTED) धागों द्वारा फंदे बनाकर उन्हें ऊपर से काट दिया जाता है जिससे सतह मखमल जैसी सुखद लगती है। दरियों के नीचे लेटेक्स फोम, यूरेथन फोम की प्लास्टिक बॉन्डनी सतह चिपकाकर कालीन रचना को दीर्घायु व मजबूती प्रदान की जाती है।
उदाहरण :- वेलवेट, ओरिएन्टल व किल्टन कालीन।

4. बिना कटे फंदे वाली दरियाँ (UNCUT PILE CARPET)
दरियों में फंदे बनाकर बिना काटे छोड़ दिया जाता है जिससे सतह खुरदरी, रूक्ष प्रतीत होती है। उदाहरण :- ब्रुशेस, टेपस्ट्री, ब्रोडलूम कालीन।

5. बिना कटे व कटे फंदों के संयोजन से निर्मित दरियों में बाहरी सतह पर फंदे बनाकर डिजाइन अनुसार कुछ फंदों को काट व कुछ फंदों को बिना काटे नमूनों को उभारकर सौन्दर्य वृद्धि की जाती है।

Q.(ii) कम्बल का उपयोग सर्दी के मौसम मे शरीर को गर्मी व उष्णता प्रदान करने हेतु किया जाता है।
Ans.

कम्बल के आवश्यक गुण जो कि चयन में अनिवार्य है।-

1. सघन रचना / रेशा
2. मजबूती एवं टिकाऊपन
3. कार्यक्षमता / उष्णता प्रदान करने की क्षमता
4. साइज / आकार मे उपयुक्त
5. रंग, नमूने, प्रिंट एवं डिजाइन
6. देखरेख एवं संरक्षण मे सुविधापूर्ण

1. सघन रचना (COMPACT) एवं लम्बे रोएँ वाला कम्बल सर्वश्रेष्ठ होता है। लम्बे रोओं के बीच शरीर की गर्मी बाहर व ठंडी हवा अन्दर प्रवेश नहीं करती है। हवा ताप की कुचालक होकर शरीर को गर्मी प्रदान होती है।
2. डायनेल सिंथेटिक रेशों से निर्मित कम्बल कोमलता, मजबूती एवं टिकाऊपन धुलाई, देखभाल, संरक्षण, कीट फफूंद सुरक्षा की दृष्टि से सर्वोत्तम होते है।
3. कम्बल के चयन में साइज, किनारी (SELVEDGE) की किस्म एवं मजबूती की दृष्टि से 8X9 फीट साइज व रेशमी या साटिन की किनारी उत्तम होती है
4. कम्बल का रंग, नमूने, प्रिंट एवं डिजाइन कक्ष एवं बिछावन के रंग से मेल खाता हो तो कक्ष की शोभा में वृद्धि तथा प्रयोगकर्ता को मानसिक संतुष्टि प्राप्त होती है।
5. देखरेख एवं संरक्षण मे कम्बल सुविधापूर्ण होना चाहिए। अतः धुलाई के प्रकार (Dry clean or Homewash) निर्णय पर कम्बल को दीर्घायु बनाया जा सकता है। शुष्क धुलाई (Dry Cleaning) से कम्बल का रंग-रूप नमूने, प्रिंट डिजाइन ज्यों के त्यों बने रहते हैं। कम्बल की सतह पर गुठली, रोएँ दोष उत्पन्न नहीं होने से कम्बल आकर्षक बना रहता है।

Q.(ii) चयन एवं क्रय में तौलिये के आवश्यक गुण

Ans. जल एवं नमी को अवशोषित करने के लिए तौलिये का उपयोग किया जाता है।

कार्य उपयोगिता के आधार पर तौलिये के प्रकार व उचित साइज :-

1. स्नान तौलिया (BATH TOWEL) (22"×44")
2. हाथ-मुँह पोंछने की तौलिया (HAND & FACE TOWEL) (14"×20")
3. बर्तन पोंछने की तौलिया (DISH TOWL) (14"×20")
4. रसोई कार्य हेतु तौलिया (KITCHEN TOWL) (20"×40")

- नमी अवशोषण की दृष्टि सूती, लिनन रेशों से निर्मित तौलिया उत्तम।
- मजबूती, अच्छी संरचना के लाभ हेतु पाइल बुनाई से निर्मित सिंगल लूपदार तौलिये श्रेष्ठ।
- कोमल, मुलायमपन गुण के लिए कम बटाई वाले धागों से निर्मित तौलिये व रगड़ने के उद्देश्य से Twisted बटाई युक्त तौलिये उत्तम।
- रंग, नमूने-डिजाइन के आकर्षण में न पड़कर तौलिये में नमी सोखने की विलक्षण क्षमता हो।
- हल्के रंग की तौलिया स्वास्थ्य की दृष्टि से सर्वोत्तम होती है। क्योंकि गंदगी शीघ्र दिखाई देने से धुलाई जल्दी² होती है।
- वजन में हल्के और रोंएदार तौलिये धुलाई व शीघ्र सूखने से उत्तम।
- तौलिये की दोनों किनारों (side) में पतली मजबूत किनारी होनी चाहिए।

Q. (iii) रेडीमेड परिधानों का परिचय (INTRODUCTION) एवं विशेषताएँ

Ans- रेडीमेड परिधान उन परिधानों को कहा जाता है जो कि बाजार में सिले-सिलाये पहनने के लिए तुरंत तैयार रूप में उपलब्ध होते है।

रेडीमेड परिधान (R.M.G.) परिचय :-

संयुक्तराज्य अमेरिका में रेडीमेड परिधानों का चलन 1825 - 1830 के मध्य हुआ। प्रथम निर्माता न्यूयार्क शहर के मेयर जार्ज आपडयेक थे। उन्होंने 1831 में हडसन स्ट्रीट में फैक्ट्री खोली। 1835 तक पुरुषों के मध्यम श्रेणी के परिधान तैयार किये जाते थे।

सन् 1850 में सिलाई मशीन का प्रथम आविष्कार हुआ। सन् 1851 में अमेरिका निवासी आइजक मेरिट सिंगर नामक व्यक्ति ने सिंगर नामक पहली सिलाई मशीन बनाई। सिलाई मशीन के आविष्कार से पूर्व तक सारे परिधान हाथों से तैयार किये जाते थे। 1860 में अलबेजर बुरिक ने P.P का निर्माण। सिलाई मशीन के आविष्कार के बाद भारत में R.M.G. वस्त्र उद्योग प्रारंभ हुआ। प्रारंभ में पुरुषों के तथा बाद में लोगों की बढ़ती रुचि व पसंद अनुरूप स्त्रियों व बच्चों के परिधान तैयार होने लगे।

रेडीमेड परिधानों में निम्नलिखित विशेषताएँ होती है :-

1. इनका निर्माण प्रचलित फैशन एवं शैली के पूर्वानुमान के आधार पर उद्योगों में किया जाता है।
2. R.M.G. पहनने के तुरंत तैयार रूप में उपलब्ध।
3. अवसर (सामान्य- विशेष) व मौसम अनुरूप कपड़ों की विभिन्न किस्मों जैसे - सूती, ऊनी, रेशमी, सिथेटिक व अन्य सजावटी वस्त्रों में तैयार उपलब्ध
4. प्रमाणिक नापों व साइज जैसे - S, M, L, XL, XXL आदि में उपलब्ध।
5. आयु व लिंग अनुसार (शिशु से वृद्धावस्था) व (बालक-बालिकाओं, स्त्री-पुरुष) उपलब्ध।
6. निम्न-मध्यम उच्च वर्ग या आर्थिक स्थिति/बजट अनुसार उपलब्ध।
7. विभिन्न रंगों में, मैचिंग डिजाइनों में रुचि व पसंद अनुसार उपलब्ध।
8. प्रचलित नवीनतम फैशन शैली में विभिन्न परिधान शैली उपलब्ध।
9. विशिष्ट फैब्रिक व एसेसरीज, वर्क आवश्यकता अनुरूप एक से अधिक रंगों में उच्च मशीन तकनीक में निर्मित उपलब्ध।
10. अत्यधिक आकर्षक रूप तथा गृहसज्जा आवश्यकतापूर्ति हेतु (फर्निशिंग) उपलब्ध।

Q. 2. अवसर अनुसार परिधान चयन में सावधानियाँ :
Ans.

जीवन में परिधान/वस्त्र मूलभूत आवश्यकता के अतिरिक्त सामाजिक सांस्कृतिक, व्यक्तित्व प्रतिष्ठा की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। जीवन में दैनिक सामान्य व विशेष क्रिया कलापों, परम्पराओं के निर्वहन अवसर प्रतिक्षण बने रहते हैं। इन्हें कार्य प्रकृति के विशेषता अनुसार दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है।-

1. सामान्य अवसर (CASUAL
   - घर में पहने जाने वाले परिधान (रात-दिन)
   - विश्राम के परिधान
   - विद्यालय/महाविद्यालय
   - यात्रा के परिधान
   - आफिस के परिधान/कार्यस्थल
2. विशेष अवसर (FORMAL
   - ऑफिस के परिधान (इन्टरव्यू, मीटिंग, समारोह)
   - पार्टी के परिधान (जन्मदिन, शादी विवाह वर्षगांठ धार्मिक त्यौहार

अवसर अनुसार परिधान चयन के लाभ :-

(1) आकर्षक व्यक्तित्व
(2) आत्मविश्वास में वृद्धि
(3) कार्य करने में आसान
(4) विवेकपूर्ण चुनाव
(5) धन का उचित सदुपयोग

अवसर सामान्य हो या विशेष परिधान चयन में व क्रय में निम्न बिन्दुओं पर सावधानी रखनी चाहिए।—

- मौसम/जलवायु
- कपड़े की किस्म/कार्यक्षमता
- रंग व रंग का पक्कापन
- नमूने/प्रिंट व डिजाइन आकर्षण
- आयु व लिंग
- नवीनतम फैशन व शैली
- व्यवसाय/व्यक्तित्व
- व्यक्तिगत रुचि व पसंद
- देखरेख व संरक्षण
- आर्थिक स्थिति

Contd----

Q.2- 'Contd-

Ans

- अवसर सामान्य / विशेष हो मौसम / जलवायु का प्रतिक्षण संबंध है। अत: सर्दी, गर्मी, वर्षा के मौसम अनुसार कपड़े की किस्म व परिधान शैली हो।
- जैसे - गर्मी में सूती, मलमल, जारगंडी, सिफॉन कपड़ों से निर्मित कुरता-पायजामा स्कर्ट टॉप, सलवार सूट।
- सर्दी में गर्म वस्त्रों जैसे कॉटसवूल, वूल, टेरीवूल रेशम निर्मित परिधान - कुरते, लैगिंग, पैंट फिरन, स्वेटर, कार्डिगन, जैकेट, कोट आदि।

परिधान का मुख्य उद्देश्य शरीर को आराम व सुरक्षा प्रदान करना है। परिधान गर्मी में शीतलता व सर्दी में गर्मी प्रदान करे।

- कपड़े की किस्म / उपयुक्तता

कपड़े की किस्म में अवसर की अनुकूलता सहित, मजबूती एवं टिकाऊपन सघनरचना, सिकुड़न प्रतिरोधकता, चमक आदि गुणों पर ध्यान देना चाहिए। शुद्ध रेशों से निर्मित वस्त्र की अपेक्षा मिश्रित रेशों से निर्मित वस्त्र लाभदायक होते हैं।

- रंग व रंग का पक्कापन जाँच आवश्यक है अन्यथा महंगा, सुन्दर व आकर्षक परिधान एक-दो धुलाई में भद्दा व अनाकर्षक हो जावेगा।

रंग त्वचा के अनुकूल व मौसम अनुकूल जैसे सर्दी में गहरे और चमकीले, गर्म प्रकृति के रंग लाल, पीले, नारंगी तथा गर्मी में ठंडी प्रकृति के हल्के रंग हरा, नीला, गुलाबी आदि का चयन परिधानों में करना चाहिए।

- नमूने, प्रिंट / डिजाइन का चुनाव सामान्य व विशेष अवसर व धार्मिक परम्परा अनुसार किया जाना चाहिए जैसे सामान्य अवसर कम लागत वाली डिजाइनों व विशेष व धार्मिक अवसरों परम्परा अनुसार विशेष वर्क युक्त कीमती परिधानों का चयन हो। डिजाइनों में फैशन व शैली में व्यक्तिगत रुचि व पसंद पर सर्वाधिक ध्यान मानसिक संतुष्टि के लिए देवे।
- आयु-लिंग, व्यवसाय, रुचि-पसंद व्यक्तित्व का ही प्रमुख भाग है। अत: अपनी आयु-लिंग, शरीर आकृति, त्वचा के रंग, रुचि-पसंद, व्यवसाय पदगरिमा को पूर्णरूपेण ध्यान रख परिधान में रंग-शैलियों में फैशन का विवेकपूर्ण चयन किया जाना चाहिए।
- देखरेख व संरक्षण परिधान की कीमत / लागत, दीर्घायु का निर्धारण करता है। अत: सामान्य व विशेष अवसरों हेतु परिधानों के क्रय-चयन में देखरेख / संरक्षण की पूर्ण जानकारी लेने पश्चात ही निर्णय लेवें ताकि परिधान का लम्बे समय तक उपयोग किया जा सके।
- आर्थिक स्थिति क्रय चयन में महत्वपूर्ण है। अत: बजट अनुसार चयन व क्रय हो ताकि मानसिक संतोष बना रहे।